Consumption Function

[illegible]

Oxford

Scanned with CamScanner

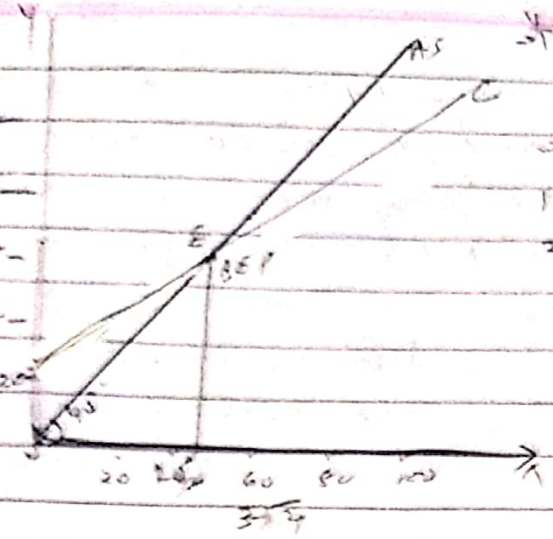

जैसे ही आय बढ़ती है उपभोग व्यय भी ठीक इसी अनुपात में बढ़ता है जैसे जब आय 100 करोड़ रुपये है तो उपभोग भी 100 करोड़ रुपये है, यदि आय बढ़कर 200 करोड़ रुपये हो जाती है तो उपभोग व्यय भी बढ़कर 200 करोड़ रुपये हो जाती है। अतः यह रेखा अर्थव्यवस्था की कुल आय तथा कुल उपभोग व्यय की समानता स्पष्ट करती है यह एक काल्पनिक रेखा है।

CC रेखा कुल उपभोग वक्र है जो विभिन्न स्तरों पर वास्तविक उपभोग को स्पष्ट करती है। उपभोग वक्र यह बिन्दु O से आरम्भ होती है। इसका कारण यह है कि जब आय शून्य होती है तो भी उपभोग 200 करोड़ का होता है। CC वक्र बायें नीचे से ऊपर की तरफ है। इससे सिद्ध होता है कि आय के बढ़ने के साथ साथ उपभोग भी बढ़ता जाता है। बिन्दु E पर आय एवं उपभोग बराबर है क्योंकि इसी बिन्दु पर उपभोग वक्र CC कुल पूर्ति वक्र AS को काटता है। इसे साम्य बिन्दु भी कहा जाता है। E बिन्दु के बाईं ओर उपभोग वक्र CC AS के ऊपर है। इससे स्पष्ट होता है कि उपभोग व्यय आय से अधिक है इसलिए बचत ऋणात्मक है। E बिन्दु के दाईं ओर CC AS वक्र के नीचे है इससे स्पष्ट होता है कि उपभोग व्यय आय से कम है और बचत धनात्मक है। निष्कर्ष के रूप में हम लोग कह सकते हैं कि आय/रोजगार व उपभोग के बीच निम्नलिखित सम्बन्ध पाया जाता है

(1) आय में होने वाली प्रत्येक वृद्धि के साथ साथ उपभोग में भी वृद्धि होती है।

(2) सैद्धान्तिक रूप से आय शून्य हो सकती है परन्तु उपभोग सदैव धनात्मक होता है

(3) आय के एक निश्चित स्तर के पश्चात उपभोग में होने वाली वृद्धि आय में होने वाली वृद्धि से कम होने लगती है। इसका कारण यह है कि आय के उच्च स्तर पर लोग अपनी आय के कुछ भाग को बचत करने लगते हैं। कीन्स के अनुसार यह उपभोग के मनोवैज्ञानिक नियम के अनुसार होता है।

विशेषताएं — (1) मनोवैज्ञानिक धारणा — इसपर अनेक तत्वों जैसे फैशन, रुचि, आदत आदि का प्रभाव पड़ता है। अल्पकाल में ये तत्व स्थिर रहते हैं इसलिए अल्पकाल में उपभोग प्रवृत्ति स्थिर रहती है

(2) असमान उपभोग प्रवृत्ति — निम्न आय वर्ग के उपभोग प्रवृत्ति उच्च आय वर्ग से अधिक होती है। इसका कारण यह है कि गरीब वर्ग

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner